पूर्ण

ओम पूर्णमदम पूर्णमिदह पूर्णत पुरण मुदच्यते|
पूर्णस्य पूर्ण मादाया पूरणमेव वाशिष्यते||
ओम शांति शांति शांति ही|||

तात्पर्य:

परमात्मा परिपूर्ण है।
पूर्ण के साथ पूर्ण को जोड़ने से...
पूर्ण से पूर्ण को निकालने से ...
शेष पूर्ण ही रहेगा।
यही श्रुति वाक्य है। इस वाक्य को ठीक से समझने से..
सारा जीवन इसमें ही छिपा है। मोक्ष मार्ग इसमें ही छिपा हुआ है....
समस्त साधनों का सार इसमें समाहित है।
0 + 0 = 0..
0 - 0 = 0..
लेकिन..
0 + 1 = कितना है...
हम तुरंत समाधान देते हैं कि वह 1 है...
यहां शून्य..
एक के साथ मिलने से, वह एक में बदल जाता है..
0 + 2 = 2...
शून्य 2 के साथ मिलने के तुरंत शून्य गायब होकर...
वह दो में बदल जाता है। अर्थात..
शून्य जिसके साथ मिलता है उसकी तरह बदल जाता है।
गहरी नींद में हम पूर्ण भगवान की तरह रहते हैं। तब हमें कोई मनोविकार नहीं होते। शून्य की तरह रहने वाले हम जब नींद से उठते हैं, तब हम प्रकृति में मिल जाते हैं...
हम स्वयं प्रकृति बन रहे हैं,
हम किसके साथ मिलते हैं...
उसी की तरह हम बदल रहे हैं..
ठीक से ध्यान दीजिए...
तुम्हारे सामने एक व्यक्ति है...
उसने विगत में आपकी बहुत मदद की है...
उस व्यक्ति को देखने के तुरंत..

आपके भीतर उसके प्रति आत्मीयता पैदा होता है। आप किसी भी तरह उसकी मदद करने के लिए सोचते हो।
एक व्यक्ति ने तुम्हें बहुत दुख पहुंचाया..
वह दिखाई देने के तुरंत ही आप उसे किसी भी तरह दुख देने के लिए सोचते हो ...
यदि सामने वाला व्यक्ति प्यार के साथ आता है..
तो तुम्हें उसके प्रति प्रेम उत्पन्न होता है...
यदि सामने वाला व्यक्ति तुम्हें सम्मान करता है..
तो तुम्हें उसके प्रति सम्मान उत्पन्न होता है..
अर्थात..
हम सामने वाले व्यक्ति में जो भी गुण देखते हैं...
हम अनजाने से ही उस गुण के साथ मिलकर..
उस गुण की तरह बदल रहे हैं..
“हम जिसके साथ मिल रहे हैं... उसी की तरह बदल रहे हैं”।
हमारे भीतर शून्य (0) की तरह उपस्थित परमात्मा तत्व..
सामने वाले व्यक्ति में रहने वाले क्रोध के साथ मिलने से वह क्रोध जैसे बदलकर हमें क्रोध आता है।
आप प्रेम से मिलते हैं तो वह प्यार की तरह....
द्वेष के साथ मिलते हैं तो द्वेष की तरह... बदल जाते हो।
सामने वाले में अहंकार को देखते हो तो आपके भीतर भी अहंकार उत्पन्न होता है।
इसलिए..
हर एक जीव में...
मनुष्य में..
एहसास करें कि परमात्मा का अस्तित्व है..
और उसके साथ अनुसंधान होना है।
अर्थात आपके भीतर की पूर्णता को...
सामने वाले व्यक्ति के भीतर की पूर्णता के साथ विलीन करना है ...
तब पूर्ण ही आने वाला है।
सामने वाला इंसान को देखने के तुरंत उसके दोषों को पहचानने से...
हम उस व्यक्ति में जिसे पहले देखते हैं..
हम वैसे बदल रहे हैं..
इस महान सत्य पर ध्यान रखना है।
इसलिए किसी में भी...
भगवान को देखने में सक्षम होकर..
उसके साथ मिलने से..

हम भी भगवत तत्व की तरह बदल जाते हैं।
सदा इस सृष्टि के हर एक वस्तु में भी उपस्थित परमाणु स्वरूप में रहने वाला भगवान से अनुसंधान होना है।
अर्थात अच्छा बुरा तटस्थ लक्षणों में, सारे गुणों में, सभी विचारों में, सारे अनुभूतियों में, सभी मन भावनाओं में, सभी बीमारी के लक्षणों में, सारे स्वास्थ्य लक्षणों में, पूर्णता का अनुभूति पाना है।
यहां पूर्ण या परमात्मा का अर्थ निराकार, व्यापक, निश्चल, निर्गुण, अक्षय-पात्र, सच्चिदानंद स्वरूप, शांति, तृप्त, ब्रह्मानंद है।
हरि ओम तत्सत।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**